Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 5, May - 2023 Publication Date: 31/05/2023

DOIs:10.2018/SS/202305011 --:-- Research Paper / Article / Review

आधुनिक चित्रकला में भीमबेटका के शैलचित्र एवं वाकणकर के रेखांकन का प्रभाव

[1] अभिषेक चौरसिया, [2] डॉ. किशोर दिगांबर इंगळे
[1] शोधकर्ता, ललित कला विभाग, आर.टी.म.ना.यु., नागपुर
[2] अधिव्याख्याता, शासकीय कला व अभिकल्प महाविद्यालय, नागपूर
Email - achourasia1@gmail.com

सारांश : भारतीय लोकचित्रकला और अन्य लोककलाए तथा कुछ आधुनिक चित्रकला भारतीय प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्रो से मिलते-जुलते है। प्रागैतिहासिक युग के शैलचित्र हजारो वर्ष पुराने होते हुए भी वर्तमान की चित्रकला व लोकचित्रकला और प्रागैतिहासिक कालखंड के शैलचित्रों में आंतरिक संबंध को महशुश किया जा सकता है। भारत के अनेक प्रांतो में प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्र और शैलाश्रय विद्यमान है। अथवा प्रतेक शैलचित्रो का अपना विशेष महत्व व इतिहास है। स्व. डॉ. विष्णुश्रीधर वाकणकर जी के योगदान के कारण भीमबेटका के शैलचित्रो पर विशेष ध्यान जाता है। वाकणकर जी ने भीमबेटका के शैलचित्रो का गहन अध्ययन करके शिलचित्रो का वर्गीकरण करके प्रत्येक युग के शैलचित्रो व अन्य रहस्यों से हमे परिचित किया। शैलचित्रो के वर्गीकरण करने के लिए प्रतेक शैलचित्रो का रेखांकन किया जिन्हे देश-विदेशो के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं अथवा अपने व्याख्यानों से और कालदलनो में प्रदर्शित करके भीमबेटका के शिलचित्रो से परिचित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया फलस्वरूप भारत के कुछ प्रमुख आधुनिक चित्रकारों ने वाकणकर के रेखांकन से (भीमबेटका के शिलचित्रो पर) प्रभावित होकर पारंपरिक लोकचित्रकला व भीमबेटका के शैलचित्रो को अपनाया और इन्हे आधुनिक चित्रकला के स्वरूप में साकार किया। श्री जगदीस स्वामीनाथन, के. सी. एस. पन्निकार, प्रभाकर बर्वे, जमीनी रॉय, के. जी. सुब्रमण्यम व अन्य आधुनिक चित्रकारों की कलाकृतियों में हमे पारंपरिक लोकचित्रकला और पाषाण कालीन शैलचित्रो के विषय तथा आकारों व तंत्र विषयो का दर्शन होता है।

बीज शब्द : शैलचित्र, परंपारीक लोकचित्रकला, आधुनिक चित्रकार, प्रभाव ।

१. प्रस्तावना :

भारतीय प्राचीन सभ्यता के साक्ष्य भीमबेटका के पाषाणकालीन शैलाश्रय अथवा यह से प्राप्त ७५० से अधिक शैलचित्रो से हमारे पूर्वजो के अस्तित्व, रहन-सहन, संस्कृति व कलात्मक जीवन शैली का परिचय करा रही है। इनकी खोज स्वर्गीय डॉ. विष्णुश्रीधर वाकणकर जी द्वारा सन् १९५७-५८ में हुई। इस खोज में वाकणकर जी ने पाया की, यह शैलचित्र विश्व के अन्य शैलचित्रो के तुल्य प्राचीन अथवा सबसे अधिक और समृद्ध है। इन शैलचित्रो के परिक्षण करने पर वाकणकर जी को "आदिम मानव की भूख, शिकार एवं संग्रहण की अवस्था तथा उसकी संस्कृति के आधार निर्मित कला के अनुसार फिर से इनका वर्गीकरण किया और कर्नल की धारणा को गलत सिद्ध कर दिया।"[१] खोज के दौरान यह भी ज्ञात हुआ की इन शैलाश्रयों में पूर्व पाषाण कल से लेकर मध्य पाषाण काल तक मनुष्य रहा होगा। इसलिए इन शैलचित्रों का अस्तित्व ३०,००० वर्षो से अधिक पुराना है।

पर्याप्त साधनो के कारण वाकणकर जी ने प्रत्येक शैलचित्रो का रेखांकन किये (भीमबेटका व अन्य शैलाश्रयों के ७५०० हजार से अधिक रेखांकन किये) इन सभी रेखांकन का गहन अध्ययन करके भीमबेटका के शैलाश्रयो में मनुष्य का अस्तित्व पूर्ण पाषाण काल से लेकर मध्युगीन काल तक सात भिन्न कालखंडो को विभाजित किया। भले ही भीमबेटका की खोज कुछ वर्ष पूर्व ही

हुई है, परन्तु आधुनिक चित्रकला में और भीमबेटका और अन्य पाषाण कालीन शैलचित्रो अथवा पारंपरिक लोकचित्रकला में आंतरिक संबंध की अनुभूति होती है। वाकणकर जी ने अपने रेखाचित्रों को समाचार पात्रो, पत्रिकाओं में प्रकाशित किया तथा अपने व्याखनो व अपने रेखांकनों का कलदालन में प्रदर्शित करके भीमबेटका से परिचित करने का प्रयाश किया। भारत की कुछ पारंपरिक लोकचित्रकला जैसे महाराष्ट्र की रंगोली, वारली, राजस्थान की मांडना, ऐसे ही बंगाल की अल्पना, बिहार, छत्तीसगढ़ व अन्य राज्यों की लोकचित्रकला प्रसिद्ध है। इन सभी लोकचित्रकलाओं का प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्रो का आंतरिक रिश्ता है। इन सभी लोकचित्रकलाओ को पारंपरिक रूप से प्रत्येक पर्व में बड़ी श्रद्धा, प्रेम, धार्मिक मान्यताओं के आधार पर चित्रों को साकार किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं, तंत्र व आदि उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु इन्हे इन लोकचित्रों को साकार करने की प्रथा हजारो वर्षो से चली आ रही है। भारत के कुछ विख्यात आधुनिक चित्रकार जैसे श्री जगदीस स्वामीनाथन, के. सी. एस. पन्निकार, प्रभाकर बर्वे, जमीनी रॉय, के. जी. सुब्रमण्यम व अन्य आधुनिक चित्रकारों ने इन पारंपरिक व पाषाण कालीन शिलाचित्रों और वाकणकर जी के रेखाचित्रों से प्रभावित होकर इन पारंपरिक चित्रों को आधुनिक चित्रकला के स्वरूप में साकार किया।

२. सन्दर्भ शाधनो का अवलोकन :

'लालित्यदर्शन-पूर्व' विजय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक में भारत के विविध कलाओं व ग्रंथो का उल्लेख किया है। सौंदर्यशास्त्र, संगीत, नाटय, नृत्य, चित्रकला, शिल्पकला व अन्य विषयो पर चर्चा की गई है।'बस्तर (लोककला संस्कृति) पुस्तक में बस्तर की लोकप्रिय लोकनत्य, लोकगीत व लोककला पर विस्तृत उल्लेख है। 'आदिवासी कला' पुस्तक में भावसार विखला जी ने राजस्थान की आदिवासी कला व लोककला में अंतर बताते हुए आदिवासी कला का वर्गीकरण किया। 'विश्व रंग" पत्रिका में श्री शरद कोकास जी का लेख है। इन्होंने लेख में स्व. वाकणकर जी ने भीमबेटका के शैलचित्रों की खोज किस प्रकार किया व इनके योगदान से हम भीमबेटका से परिचित कैसे हुए।

उपर्युक्त सभी ग्रंथो व शोध पत्रों तथा पत्रिकाओं और अन्य ग्रंथो से भीमबेटका की जानकारी प्राप्त हुई साथ में वाकणकर जी के शोध प्रणाली का दर्शन हुआ, शोध के दौरान वाकणकर जी के भीमबेटका के शैलचित्रो पर बनाए रेखाचित्रों अथवा आधुनिक चित्रकला व लोकचित्रकला में आंतरिक संबंध को जानने में मदद मिली।

३. भीमबेटका के शैलचित्र :

भीमबेटका की गुफाये आदि-मानव के शैलाश्रय व शैलचित्रो के लिए जग प्रसिद्ध है। यहां के शिलाचित्र भारतीय उपमहादिव्प में मानव जीवन के सबसे प्राचीन है।

चित्र-१ भीमबेटका के शैलचित्र का छाया चित्र व वाकणकर द्वारा बनाया गया रेखाचित्र
सौजन्य: चित्रकार चंद्रकांत चन्ने

भीमबेटका से तातपर्य पौराणिक महाकाव्य महाभारत के पांच पांडवो में से भीम से जुड़ा है। भीमबेटका का आशय भीम के बैठक स्थान से है। भीमबेटका का प्रथम चर्चा ब्रिटिश काल में कॉकबर्न के द्वारा प्रकाशित किया गया था इस लेख के आधार पर ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू. किनकैड ने भोजपुर क्षेत्र के आदिवासीयो से मिली जानकारी के आधार पर "भीमबेटका को बौद्ध स्थल के रूप में परिचित कराया परंतु इन शिलाश्रयों की खोज सबसे पहले पुरातात्विक स्व. श्री विष्णुश्रीधर वाकणकर जी सन १९५७-५८ में किया और इस उत्खनन की खोज से कई भ्रांतियों को दूर किया"[२] तथा हमे प्रागैतिहासिक शिलचित्रो, शैलाश्रयो से परिचित कराया।

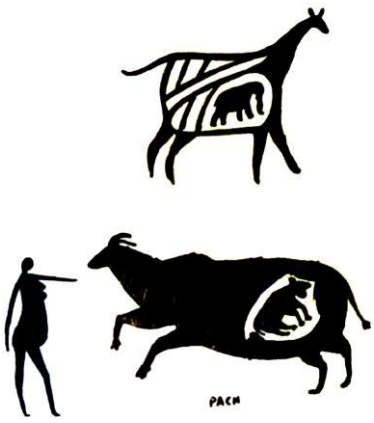

चित्र-२ भीमबेटका के शैलचित्र पर वाकणकर द्वारा बनाया गया रेखाचित्र
सौजन्य: चित्रकार चंद्रकांत चन्ने जी

भीमबेटका के शैलचित्रो पर वाकणकर जी के अध्ययन से ज्ञात होता है की आदिम मानव की जैसे-जैसे सोच में वृध्दि होते गई, वैसे-वैसे इनके रहन-सहन में भी परिवर्तन होता गया। यह बदलाव शैलचित्रो में दिखाई देता है। पाषाण काल के शुरुवात के कालखंड में आदिम मानव जंगलो में भटकते प्रकृति के परवर्तनो से जूझते हुए गुफाओ में एक परिवार व टोली बनाकर रहने लगा। भीमबेटका में विश्व की सबसे पुरानी मानव निर्मित पत्थर की दिवार और फर्श के प्रमाण मिले है। भाषा के अभाव में कुछ सांकेतिक हलचल अथवा प्रकृति से मिले अनुभव से स्वतंत्र स्वरुप में जानवरो व मानवाकृतियाँ ज्यामितीय रेखाओ में त्रिभुज, आयत, व्रतों अथवा अन्य आकारों में साकार किया परन्तु इन्हे देखते ही हम बारहा सिंघा, हाथी, हिराण, मोर, का चित्रण है। शिकार दृश्य में जंगली सुवर, धनुष, तीर,भाले, कुल्हाड़ी, चाकू आदि हतियारो को पहचाना जा सकता है, अथवा ऐसे ही ज्यामितीय अकारो में किट-पतंगे भी दिखाई देते है। किन्तु जानवरो की कुछ आकृतिया मूल स्वरुप में बिना छाया-प्रकाश के भी दिखाई देते है। इन शैलचित्रो में से एक मानव को नृत्य की मुद्रा में व एक हात में त्रिशूल है जिस वजह से वाकणकर जी ने इसे 'नटराज' नाम दिया है। इन शैलचित्रो में टोली में शिकार दृश्य, लोकनृत्य के चित्र भी दिखाई देते है, इन चित्रों में से कुछ चित्रों के पीछे चार-पांच चित्र भी दिखाई देते है, कुछ चित्रों को बगैर मिटाए ही पुराने चित्रों के ऊपर दूसरे चित्र बनाये गए। इन चित्रों को बनाने के लिए प्राकृतिक वनस्पति रंगो (सफेद, लाल, हरा, काला) व शाधनो का उपयोग किया गया है। जो समय के साथ मूल रंग से गहरे हो गए है। वाकणकर जी ने शैलचित्रो को सात कालखंडो में वर्गीकरण किया है। जो इस प्रकार है।

३.१.१. पहला कालखंड-पूरा पाषाण काल (ऊपरी पेलियोलिथिक) (३०००० से ६०००० ईस्वी पूर्व)

पूरा पाषाण कालखंड के शैलचित्र विशाल काय स्वरूप में बाइसन, बाघ, गैंडा जानवरो का चित्रण है।

३.१.२. दुसरा कालखंड-मध्यपाषाण काल (मेसोलिथिक) (१२००० से ५००० ईस्वी पूर्व)

मध्यपाषाण कालखंड के शैलचित्र के आकार पूरा पाषाण काल की तुलना में छोटे स्वरूप तथा रेषाओ से सजावट किया गया है। जानवरो के साथ-साथ में मानव आकृतिया भी साकार किते गए है। इन शैलचित्रो में शिकार दृश्य है। शिकार दृश्य में शिकार के लिए उपयोग आने वाले हतियार जैसे कांटेदार भाले, नुकीले डंडे, धनुष-तीर आदि का चित्रण है। अथवा कुछ शैलचित्रो में कुलदेवी-देवताओ का चित्रण है। जनजातियों के बिच में युद्ध के दृश्यो को साकार किया गया साथ में समूह नृत्य, वाद्ययंत्रों का चित्रण, माताओ व बच्चे अथवा मृत जानवरो को लेजाते हुए लोग, और अन्य विषय कर चित्रण है।

३.१.३. तीसरा कालखंड-नवपाषाण काल (चालकोलिथिक) (ताम्रश्मयुग) (४,२०० ईस्वी पूर्व)

नवपाषाण कालखण्ड के शिलचित्रो में आदिम मानव कृषि कार्य के दृश्य अंकित है। साथ में पशु पालन के दृश्य है। तथा अपने जीवन-व्यापन के लिए अनाज व साधनों के साथ आदान-प्रदान के दृश्यों का चित्रण है। चित्र विषयो में आदि बदलाव दिखाई देते है।

३.१.४. चौथा व पांचवा कालखंड-प्रारंभ ऐतिहासिक काल (लोहयुग) (१३०० से १०००)

इस कालखंड के चित्रों में बदलाव बेहद अहम माने गए है। क्युकी इस का के शैलचित्रो का चित्र सफेद व पिले रंग में चित्रित है। सफेद रंग के चित्र पवित्र व देवताओ से सम्बन्धित चित्र है। और कुछ शैलचित्रो में पोशाक के साथ में मानव चित्रण है। साथ

चित्र-३ भीमबेटका के शैलचित्र पर वाकणकर द्वारा बनाया गया रेखाचित्र
सौजन्य: डॉ. नारायण व्यास जी

में धार्मिक गतिविधियों का चित्रण है। जिसमे यक्ष व वृक्ष देवताओ, आकाश तथा रथ का चित्रण है। इस काल में लिपि का चलन शुरू हुआ।

३.१.४. छटा कालखंड-मध्ययुगीन काल (लोहयुग) (१००० से ५००)

मध्ययुगीन काल के चैलचित्रो में ज्यामितीय रेखाएं और अधिक योजनाबद्ध है। पूर्वकथित जिन रंगो का उल्लेख है इन रंगो के साथ में काले रंग का उपयोग किया गया है। भीमबेटका की एक चट्टान "**जो चिड़िया घर केनाम से प्रशिद्ध है।**"[४] इस चट्टान में विभिन्न जानवर, पंछी व शिकार दृश्य चित्रित किये गए है। इन चित्रों में मुख्य रूप से विशाल काय जंगली सूअर का चित्र है। दूसरी और हाथियों का चित्रण है। बारासिंगा, बाइसन, हिरन का चित्रण है। दूसरी और मोर, साप, सूरज इत्यादि का चित्रण है। वही एक ओर शिकार दृश्यहै शिकारियों के हातो में तलवार और ढाल का चित्रण है।

इस प्रकार वाकणकर जी ने अलग-अलग कालखंडो में शैलचित्रो का वर्गीकरण किया। भीमबेटका के शैलचित्रो की खोज में वाकणकर जी के दल में डा. एस. के. आर्य, श्री नारायण व्यास, दलजीत कौर गिल, ए. एस. ओढेकर और नारायण भाटी शामिल थे।

४. आधुनिक चित्रकला :

भारतीय आधुनिक कला आंदोलन २० वी शताब्दी से प्रारंभ हुआ। समकालीन कलाकार किसी बंधन में कार्य नहीं करते हुए अपनी प्रतिभा को हर क्षेत्र में प्रसारित कर रहे हैं। चाहे वह चित्रकला हो मूर्तिकला हो या स्थापत्य व कंप्यूटर कला हो, जो कलात्मकता के पूर्ण शिखर पर विराजमान है परंतु कुछ भारतीय समकालीन चित्रकारों ने पश्चिमी प्रभाव से बचते हुए भारतीय पारंपरिक कला के विषयों, आकारो व तत्वों का अध्ययन करके इन्हें आधुनिक चित्रकला में प्रयोग करते हुए नवीन दिशा में नवीन पहचान के साथ भारतीय समकालीन चित्रकला को पूरे विश्व में पहचाना जाता है। लुप्त होती पारंपरिक चित्रकला को पुनः नवीन स्वरूप में जीवित करने का कार्य समकालीन चित्रकारों ने किया।

भारत प्रांत प्राचीन संस्कृति प्रधान देश है। और भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न लोक चित्रकला विद्यमान है। जो भारतीय संस्कृति को बल तथा प्रसिद्धि दे रही है। भारत देश ग्रामीण जीवन का ताल्लुक उनके जीवन शैली, धार्मिक व संस्कृति भावना, विश्वास, अंधविश्वास, जादू-टोना, सुख-दुख आदि से फलीभूत है। तथा यही व्यवस्था आदिवासियों के जीवन जीने की परंपरा इनके लोक चित्रकला में अभिव्यक्त होता है। इन्हीं लोक चित्रकला व पाषाण कालीन शैल चित्रों को भारत के कुछ प्रख्यात समकालीन चित्रकारों ने स्वीकार किया है।

कुछ भारतीय आधुनिक चित्रकारों ने अपने अनुभव व भारतीय पौराणिक कला का अनुसरण करके अनेक विषयों पर सामाजिक, धार्मिक, तंत्र व नवीन प्रयोग करते हुए चित्रों को साकार किया भारतीय धार्मिक और तंत्र विषयों के चित्र कला के विकास के लिए पारंपरिक चित्रकला व प्रागैतिहासिक कालीन चित्र शैल चित्रों का विशेष योगदान है। सन १९५७-५८ में स्वर्गीय डॉ. विष्णुश्रीधर वाकणकर जी को भीमबेटका की गुफाओ की खोज में प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्रो का खजाना प्राप्त हुआ, उत्खनन के सयम पर्याप्त शाधनो के आभाव में वाकणकर जी ने शिलाचित्रो का रेखाचित्र बनाकर उन शिलाचित्रों का वर्गीकरण किया प्रत्येक चित्र का बड़ी गहराई से अपने तर्कों व वैज्ञानिक तथ्य के आधार पर भीमबेटका के शैलाश्रयों में प्रागैतिहासिक पाषाण युग, कस्य युग के शैलचित्रो का वर्गीकरण किया अथवा भारतीय सभ्यताओं पर कई भ्रान्तियो को भी दूर किया। वाकणकर जी के दस्तावेज से प्राप्त शैलचित्रो के रेखाचित्रों को जब समाज के बिच प्रदर्शित किया गया, तब हम भीमबेटका के शैलचित्रो से परिचित हो सके। हम यह भी कह सकते है, की वाकणकर जी ने अपने रेखाचित्रों को लोगो तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन रेखाचित्रों से भारतीय व पश्चिमी कलावर्ग और कलाप्रेमी आकर्षित हुए। इतना ही नहीं कई भारतीय आधुनिक चित्रकारों ने इन रेखाचित्रों से प्रभावित होकर इन रेखाचित्रों और लोकचित्रकलाओ के विभिन्न घटको, स्वरूपों व अन्य चिन्हो को अपने चित्रों में साकार किया। यामिनी रॉय, के.सी.एस. पनिक्कर के.जी.सुब्रमण्यम, व अन्य आधुनिक चित्रकारों के चित्रों में भीमबेटका और भारतीय लोकचित्रकलाओ का दर्शन होता है।

५. यामिनी रॉय (१८८७-१९७२)

यामिनी रॉय का जन्म १८८७ में पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले में हुआ। कला शिक्षण कोलकाता के 'गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट' से पूर्ण हुई। यामिनी राय ने जो कला शिक्षण के दौरान जिस शैली में पारंगत हासिल किया था सन 1920 में उस कला शिक्षण शैली का त्याग करके कुछ वर्षों में नए रूपों की तलाश की, जो अनोखी और अकेली साबित हुई। **"यामिनी रॉय के चित्रों की रेखांकन उनकी कला की बहुत बड़ी ताकत थी"**[४] साथ में चमकदार रंगों, पौराणिक प्रसंगों (हिंदू और ईसाई धर्म पर), ग्रामीण जीवन, कृष्ण लीला गोपियों का नृत्य व आदि विषयों पर अनगिनत चित्रों को साकार किया।

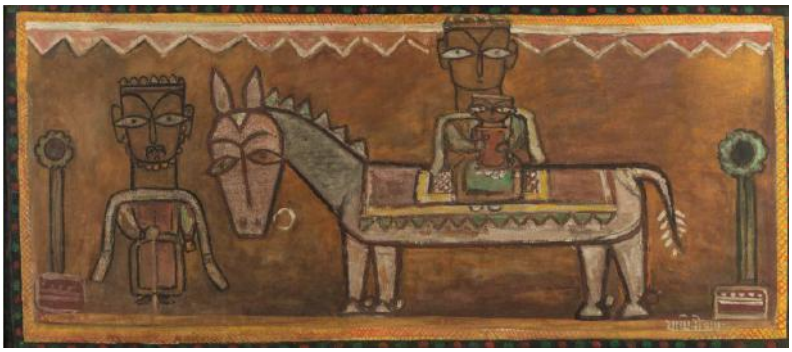

चित्र-४ शीर्षक हीन, १९.५" x ४५.७" टेम्पेरे ऑन कैनवास, जमीनी रॉय
सौजन्य: https://dagworld.com/royj2630.html

यामिनी रॉय के चित्रों में पट्टचित्रों और कालीघाट के चित्रों का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। रॉय के चित्रों में विभिन्न पशुओं जिसमें बिल्ली, मछली, हाथी, घोड़ा आदि का चित्रण बेहद आकर्षित करता है इनका चित्रण खिलौनों की तरह किया गया है। आधुनिक चित्रकला के जगत में यामिनी रॉय दूसरी ही दुनिया में चले गए।

६. के.सी.एस. पनिक्कर (१९११-१९७७)

१९११ मे कोवलेझी चिरामपुथूर शंकर पणिक्कर का जन्म तमिलनाडु में हुआ। समकालीन चित्रकारों में से एक चित्र कार थे। इन्होंने भारतीय चित्रकला में एक मौलिक सचित्र भाषा का विकास किया। वे एक शिक्षाविद, संस्थागत निर्माता, कलाकार, चित्रकार, दूरदर्शी और एक आलोचक थे। इनका कला शिक्षण तमिलनाडु और केरल में हुआ।

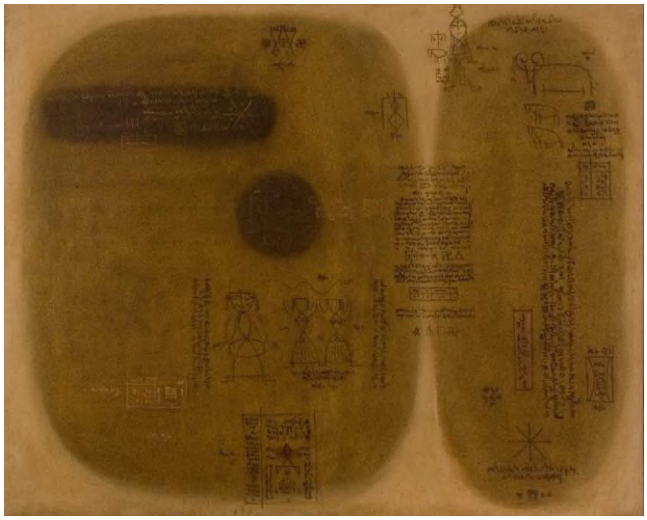

चित्र- ५ वर्ड्स एंड सिम्बल्स, के.सी.एस. पनिक्कर
सौजन्य: https://cogindia.art/indigenism-the-modern-indian-artists-dilemma/

पनिक्कर ने १९४४ में प्रोग्रेसिव आर्ट स्कूल मद्रास की स्थापना की और कुक्षी समय पश्चात इसी महाविद्यालय में प्रिंसिपल के पद में नियुक्त हुए पनिक्कर के नेतृत्व में कुछ कलाकारों ने 'चोलामण्डलम' नमक से ग्राम की स्थापना किया। यहां इनके सानिध्य में अनेकों आधुनिक कलाकारों ने कार्य किया। पनिक्कर वैसे तो भारतीय लोकजीवन पर चित्रों को साकार करते थे। परंतु बनी १९६० में इनके शैली में विशेष बदलाव दिखाई देता है, अब पनिक्कर आध्यात्मिक तंत्र विषयों पर चित्रों का सृजन करने लगे। जिसमें रहस्यमय अंको पर आधारित चित्र थे साथ में भारतीय रहस्यात्मक लिपि (मंत्रों), प्रतीकों पर चित्र सरकार किया। साथ में मोहनजोदड़ो के बैल, सूरज, मछली, सांप आदि प्रतीकों को आधुनिक चित्रकला में साकार किया।

७. के. जी. सुब्रमण्यन (१९२४-२०१६)

कलपती गणपति सुब्रमण्यन समकालीन चित्रकारो में बहुमुखी प्रतिभामान चित्रकार का जन्म केरल प्रान्त में हुआ तथा कला शिक्षण शांति निकेतन में हुआ जहा के. जी. सुब्रमण्यन को मणि दा के नाम से भी जाना जाने लगा। इन्होने अपने सुरुवाती कला जीवन में पिकासो से प्रभावित घनवादी शैली में कार्य किया परन्तु सन १९६० के दशक में सुब्रमण्यन के शैली में क्रन्तिकारी

बदलाव हुए सुब्रमण्यन केरल की लोक कला, कालीघाट पेंटिंग, और बंगाल व ओडिशा के पटचित्रो तथा भारतीय दरबारी कला से बेहद प्रभावित थे। साथ में अफ्रीका के मुखौटे व अन्य शैलियों को भी पसंद करते थे।

चित्र- ६ शीर्षक हीन, १८.२" x १५.२", के. जी. सुब्रमण्यन
सौजन्य: https://dagworld.com/dag000003913.html

सन १९६६-६७ के दौरान के. जी. ने कई अमूर्त चित्र बनाये व अपने एक व्याख्यान में कहां की "मेरे कार्य ने वास्तविक और काल्पनिक के बिच जाने की कोशिश की है। सच है जिसे हम वास्तविक कहते है, वह अपने आप में एक तरह की छवि है। मेरी रूचि एक बार अमूर्त के उद्देश्य को पारित करने में थी। मणि दा ने भित्तिचित्र, टेराकोटा और कई तरह के खिलौने भी **"एक्रेलिक पर रिवर्स पेंटिंग व सेरीग्राफी का प्रचलन भारत में पहली बार किया।"**[५] काले रंग का उपयोग भी बड़ी सुंदरता से किया है। साथ में पटचित्रो पर आधारित, पौराणिक कथाओ पर आधारित देवी-देवताओ का चित्रण व भित्तिचित्र साकार किया अथवा अपने चित्रों में कालीघाट पेंटिंग व लोककला से प्रेरित चित्र शैलियों को आधुनिक स्वरुप में साकार किया जो हमारे लिए प्रेणना दाई है।

८. निष्कर्ष: इस प्रकार वाकणकर जी की भीमबेटका की खोज बेहद महत्वपूर्ण है, अथवा भीमबेटका के शैलचित्रो पर आधारित वाकणकर जी द्वारा बनाये गए रेखाचित्रों से हमे भीमबेटका से परिचित किया। इन रेखाचित्रों से प्रभावित होकर आधुनिक चित्रकारो ने अनेक चित्र साकार किये, परिणाम स्वरूप कुछ महत्वपूर्ण आधुनक चित्रकारों के चित्रों में पारंपरिक लोकचित्रकला का दर्शन होता है, अथवा इनके आंतरिक सम्बन्ध का परिचय होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

१. घोंगे पराग,"लालित्यदर्शन-पूर्व" विजय प्रकाशन हनुमान गल्ली, सीताबर्डी, नागपुर-४४००१३

२. जगदलपुरी लाला, (२०११) "बस्तर (लोक कला-संस्कृति)" आर. बी. सिंह, विश्वभारती प्रकाशन, देहवटे चेम्बर्स, नागपुर-४४००१२

३. जी. एल. बादाम, "मध्य भारत की शैल-चित्रकला" बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन दिल्ली-११००५२

४. भावसार विखला, (२००७) "आदिवासी कला" सूचना और प्रसार मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली.

५. भरद्वाज विनोद, (२००६) "बृहद आधुनिक कला कोश" वाणी प्रकाशन, २१-ए दरियागंज, नई दिल्ली-110002

६. मानावत महेंद्र, "लोक कला मूल्य और सन्दर्भ" भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर-राजस्थान.

७. मिश्र एच. एन. "बनारस की चित्रकला" (१८ वी से २० वी सदी), कला प्रकाशन, बी-३३/३३ ए. १, न्यू साकेत कालोनी, बी. एच. यू. वाराणसी.

८. विश्वकर्मा प्रीति, (२००९) "पर्वांचल की लोक चित्रकला" कला प्रकाशन, बी-३३/३३ ए. १, न्यू साकेत कालोनी, बी. एच. यू. वाराणसी.

९. शर्मा लाल मुरारी "राजस्थान की शैलाश्रय चित्रकला", इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

१०. शास्त्री गिरीश" भारतीय लोककला के बदलते आयाम" (चुनौतियाँ एवं सम्भावनाये)

११. शेख महोम्मद गुलाम, (१९९६) "दृश्य कला" पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई.

कला पत्रिकाएं:

१. चौबे शंतोष, (२०२१) "विश्व रंग" आईसेक्ट पब्लिकेशन, २५ ए. प्रेस काम्प्लेक्स, एम. पी. नगर, जोन-४६२००१

२. “बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट” https://www.hisour.com/hi/bengal-school-of-art-36938/ सुमन

३. कुमार सिंह, “तंत्र कला यानी कला पर तंत्र का प्रभाव https://singhh63.blogspot.com/2019/09/blog-post_3.html

शोधपत्र:

१. दत्ता स्वरुप, “द मिस्ट्री ऑफ़ इंडियन फ्लोर पेंटिंग्स” https://chitrolekha.com/the-mystery-of-indian-floor-paintings/

२. दास देबमाल्या जमीनी रॉय स आर्ट: मॉडर्निटी, पॉलिटिक्स एंड रिसेप्शन
https://www.chitrolekha.com/V1/n2/14_Jamini_Roy_Art_Modernity_Politics_and_Reception.pdf

३. ब्लिनखोर्न जेम्स, “द डिजिटल फ्यूचर ऑफ़ प्रेहिस्टोरिक रॉक आर्ट इन इंडिया”
https://www.chitrolekha.com/V5/n1/03_Rock_Art_India.pdf

४. मुख़र्जी अनुजा, “कालीघाट पेंटिंग्स: अ नेशनल अर्टिफैक्ट, द फोक एंड कॉउंटर रिप्रजेंटेशन इन द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न आर्ट इन बंगाल” https://chitrolekha.com/ns/v4n1/v4n104.pdf

५. रेड्डी बाबजी तालकोना क्षेत्र, आंध्र प्रदेश में गुफाएं और आसपास के पुरातात्विक संयोजन,
https://www.academia.edu/39639635/Caves_and_the_Surrounding_Archaeological_Assemblages_in_Talakona_Region_Andhra_Pradesh

ऑनलाइन लेख:

१. (भीमबेटका की जानकारी इतिहास, पेंटिंग)
https://hindi.holidayrider.com/bhimbetka-information-in-hindi/